

anvil. From the Fifth Plan onwards, special programmes have been taken up for the welfare of Scheduled Castes and Scheduled Tribes. In all the three successive Plans i.e. the Sixth, the Seventh and the Eighth, the Planning Commission had fixed up the guidelines that funds should be allocated in proportion to the population of the Scheduled Castes and Scheduled Tribes. And those amounts should be earmarked and spent separately for the welfare of the people of these classes.

Madam, the ground realities are totally different. In all these Plans, even in the Eighth Plan, not even 50 per cent of the funds have been allocated for the welfare of the people belonging to these sections under the Special Component and Tribal Sub-Plans. Whatever is allocated, not even 50 per cent is spent. On one side there is a hue and cry on how much money is to be spent on these people and for how long. People are questioning this. On the other side, not even 50 per cent of the funds which have been allocated are being spent. There is no monitoring on the expenditure of the funds. Even the Planning process requires an active participation of the people of these sections. So, I urge upon the Government to see that the people's representatives from amongst these sections, who have suffered real poverty and untouchability and who have known the difficulties of these people, should be represented. Madam, yesterday in a meeting of the MPs of the Scheduled Castes, hon. Prime Minister was positive for this demand and he has said that the Government is thinking on these lines. So, I urge upon the Government to see that before the Ninth Plan is finalised, a man representing the Scheduled Castes and Scheduled Tribes people is inducted into the Planning Commission.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I have a problem. Somebody, who has got an appointment, wants to speak.

SHRI GOVINDRAM MIRI: Madam, I want to associate myself. *(Interruptions)*

THE DEPUTY CHAIRMAN: O.K. I accept association of all of you.

श्री गोविन्दराम मिरी: मैं श्री बंगर लक्ष्मण जी ने जो कहा है उससे अपने का असोसिएट करता हूँ। महोदया, आज इस बात का प्रचार ज्यादा हो रहा है...

THE DEPUTY CHAIRMAN: I have put your name also in association.

श्री गोविन्दराम मिरी: मेरा अनुरोध है कि उनकी मांग पूरी की जाए।

THE DEPUTY CHAIRMAN: Somebody has to go. Mr. Wasim Ahmed wants to speak first, because he has to go somewhere. I have also to finish the business at one o'clock.

पहले उनको बोलने दिया जाये ताकि वे जा सकें।

#### RE: THREAT BY MUMBAI POLITICIAN TO BURN OFFICE OF DAILY, "MAHANAGAR"

श्री वसीम अहमद (उत्तर प्रदेश): मैडम चेयरपर्सन, मैं आपके हवाले से इस हाउस को बताना चाहता हूँ कि पिछली 13, 14, 15 और 16 तारीखों को शिव सेना के वरकर्स ने, उनके एम-एल-एज-ने महाराष्ट्र के अंदर "महानगर" अखबार जो शाम को निकलता है, उस अखबार पर हमले किए हैं। ...*(व्यवधान)*...

श्री राजनाथ सिंह (उत्तर प्रदेश): यह स्टेट इश्यू है। ...*(व्यवधान)*...

उपसभापति: स्टेट इश्यू उठते हैं ऐसा कहेंगे तो फिर आपके सारे इश्यू मैं बंद कर दूंगी। ...*(व्यवधान)*... इसमें झगड़ा करने की बात नहीं है।

श्री वसीम अहमद: मेरे पास टाइम्स आफ इंडिया, जनसत्ता और महानगर की कटिप्पि है। ...*(व्यवधान)*... मैडम, मैं आपके हवाले से बताना चाहता हूँ कि शिवसेना का यह पहला हमला नहीं है, शिव सेना के नेता \* के कहने से...

उपसभापति: यहां यह कायदा है कि उनका नाम नहीं लेते जो लोग यहां पर नहीं हैं। इसलिए आप नाम मत लीजिए। ...*(व्यवधान)*...

\*Expunged, as ordered by the Chair.

**श्री गोविन्दराय मिरी:** जो यहां पर नहीं है उनका नाम नहीं ले सकते। यह रिकार्ड से निकाल दिया जाए।  
...(व्यवधान)...

**उपसभापति:** यहां का कायदा है कि यहां पर हम अखबार का नाम ले सकते हैं, किसी पोलिटिकल पार्टी का नाम ले सकते हैं। लेकिन उस व्यक्ति का नाम नहीं ले सकते जो यहां नहीं है।

**श्री वसीम अहमद:** सामना के एडीटर का नाम ले सकता हूं (व्यवधान) अगर मैं नाम नहीं लेना चाहता हूं (व्यवधान)

**उपसभापति:** वे तो यहां बैठे हैं (व्यवधान)

**श्री वसीम अहमद:** सामना के एडीटर ने हमला करवाया महानगर के एडीटर पर और वहां के स्टाफ पर। महानगर की सिर्फ गलती इतनी है कि उसने खेरनार के पांच हजार के मजमें में जो बयान खेरनार साहब ने दिया था उसको महानगर ने हुबहु छापा था (व्यवधान) सवाल यह नहीं है, सवाल है फ्रीडम आफ प्रेस का (व्यवधान) शिव सेना के लोग ... (व्यवधान)

**श्री संजय निरुपम (महाराष्ट्र):** माननीय सदस्य से मैं पूछना चाहता हूं (व्यवधान)

**श्री वसीम अहमद:** यहां जो शिव सेना के लोगों को वहां पर एकस्ट्रा कॉस्टीट्यूशनल हैसियत मिली है, यह कब तक मिलती रहेगी (व्यवधान)

**श्री संजय निरुपम:** मुझे पहले बोलने दिया जाए (व्यवधान)

**उपसभापति:** चेयरमैन साहब ने आपको परमिशन दी है। (व्यवधान) जब परमिशन दी है तो वह बोल सकते हैं (व्यवधान)

**श्री वसीम अहमद:** यह हमले कब तक होते रहेंगे (व्यवधान) मेरी यह मांग है (व्यवधान)

**THE DEPUTY CHAIRMAN:** No. No. If you say that law and order is a State subject, then none of you can open your mouth in this House. (Interruptions) This matter has been reported in the newspapers. So, let him raise it. What is there? We raise so many issues which are controversial. It is all right. The Chairman has permitted him. Let him finish. first. (Interruptions) Let him finish.

**SHRI MD. SALIM (West Bengal):** Madam, it is a question of the freedom of speech. (Interruptions)

**श्री संजय निरुपम:** इस विषय पर मैं बोलूंगा (व्यवधान)

**उपसभापति:** उनके पूरा तो कर लेने दो (व्यवधान)

**श्री वसीम अहमद:** मेरी मांग है कि शिव सेना के प्रमुख को गिरफ्तार किया जाए (व्यवधान) उनकी प्रोपर्टी की जांच की जाए (व्यवधान)

**श्री संजय निरुपम:** महानगर जैसे अखबार को बंद कर दिया जाए (व्यवधान)

**श्री वसीम अहमद:** उनकी प्रोपर्टी की जांच की जाए, यह मेरी मांग है (व्यवधान) उनकी सरकार को बर्खास्त किया जाए, यह मैं मांग करता हूं (व्यवधान)

**श्री संजय निरुपम:** कोई सवाल नहीं होता है (व्यवधान)

**श्री मोहम्मद सलीम:** आप कौन होते हैं यह कहने वाले कि कौन सा अखबार बंद कर दिया जाए (व्यवधान)

**श्री वसीम अहमद:** यह हमला कई बार हो चुका है (व्यवधान) इस अखबार की गलती सिर्फ इतनी है कि वह इन जैसी फासिस्ट फोर्सिज को नंगा करना चाहता है हिन्दुस्तान के आबाम के सामने (व्यवधान) यह अखबार उनको नंगा करना चाहता है (व्यवधान) इनकी सारी करतूतों को खोलना चाहता है (व्यवधान) यही वजह है बार-बार हमला हो रहा है (व्यवधान) सरकार की इयूटी है (व्यवधान)

**श्री मोहम्मद सलीम:** आप वहां गुंडों को भेज कर हमला करना चाहेंगे (व्यवधान)

**श्री वसीम अहमद:** यही वजह है कि मेरी मांग है कि ऐसे लोगों को सलाखों में बंद करना चाहिये (व्यवधान) 6 दिसम्बर, 1993 के दंगों में इन्होंने मासूम लोगों को, बेगुनाह लोगों को मारा (व्यवधान) यही वजह है कि महाराष्ट्र के अन्दर इनका विरोध हो रहा है (व्यवधान)

**श्री संजय निरुपम:** आपके विरोध से क्या होता है? (व्यवधान)

**श्री वसीम अहमद:** आपका विरोध तो पूरा देश कर रहा है (व्यवधान) यही वजह है (व्यवधान)

**उपसभापति:** बैठिये (व्यवधान) देखिये, आप बैठिये (व्यवधान)

श्री संजय निरुपम: मैं भी बोलना चाहता हूँ  
(व्यवधान)

उपसभापति: आप कैसे बोलेंगे, आपको इजाजत  
नहीं है (व्यवधान) बैठिये (व्यवधान)

Please sit down. (Interruptions) Mr. Nirupam, please take your seat. (Interruptions) Mr. Nirupam, please take your seat. (Interruptions) You just sit down. (Interruptions) Let me tell him the procedure. The hon. Chairman has permitted him. Okay. He has a right to speak. Many Members make their viewpoints in this House. It is quite natural that some of the hon. Members may not like it. But the Parliamentary Democracy means that you should have tolerance. Whatever you say, somebody from this side of the House or that side of the House may not like it. But that is a different matter. But then you should have tolerance. (Interruptions) Just one second, please. It is not for you to decide as to what is right and what is wrong. It is for him to say what he wants to say. If you want to say something, you take permission and say. Let the people decide what is right and what is wrong. Let the Members decide what is right and what is wrong. The House has divergent opinions. There are Members of Parliament belonging to different political parties. If you are not allowing the Members to speak in the House, where are they going to speak? On the streets? Let them speak. It is much better. (Interruptions)...

श्री संजय निरुपम: मेरे कहने का मतलब सिर्फ  
इतना है कि अगर इस घटना की ... (व्यवधान)

उपसभापति: आपके कहने का मतलब  
... (व्यवधान)

श्रीमती कमला सिन्हा (बिहार): ... उनकी भारी पिटाई  
हुई ... (व्यवधान)

एक मिनट ... (व्यवधान)

THE DEPUTY CHAIRMAN: Order, please. Just one minute. (Interruptions)... Just one minute. (Interruptions)... Just one minute. (Interruptions)...

श्री संजय निरुपम: ये गलत इन्फार्मेशन दे रहे हैं  
... (व्यवधान) यह गलत बात है ... (व्यवधान)

THE DEPUTY CHAIRMAN: Just one minute. (Interruptions)... Please sit down. (Interruptions)... Please sit down. (Interruptions)... Please take your seat. (Interruptions)... Just one minute. (Interruptions)... I said, "Please sit down." Please take your seat. (Interruptions)... Please take your seat. (Interruptions)... Please take your seat. (Interruptions)... I request you to take your seat. This is how democracy works in this country. This is how the Parliament works. You may not agree with this democracy. But you have taken an oath to be a Member of this House. So, you have to function according to your own oath. He is talking about a newspaper. Everyday Members talk about the reports in newspapers. Nobody gets so agitated. Why should you get so agitated? Let him make his point. If you want to raise a point, you have your right to raise a point. There is no point in fighting over it.

शांति से सुनिए। आप अपनी बात खत्म करके  
जाइए, आपको जल्दी जाना था।

श्री वसीम अहमद: मैडम शुक्रिया आपका। आपको  
खुद पता है कि पिछले तीन दिन से मैं नहीं चाहता था  
कि कोई ऐसी चीज कहूँ। मैंने आपसे तीन दिन पहले भी  
कहा था। मैंने नोटिस नहीं दिया। कल मेरी बदकिस्मती  
थी कि जीरो आवर नहीं हुआ और मैं अपने दोस्त जो  
एक अखबार के एडिटर हैं, अगर उन पर कोई अटैक  
करेगा तो मैं इस हाउस में इसी तरीके से उनके सपोर्ट में  
आवाज उठाऊंगा ... (व्यवधान) मैं उन लोगों में से नहीं  
हूँ (व्यवधान)

श्री संजय निरुपम: ... मैं अपनी रक्षा खुद कर  
सकता हूँ... (व्यवधान)

श्री नीलोत्पल बसु (पश्चिम बंगाल): ... बैठ  
जाओ... (व्यवधान)

THE DEPUTY CHAIRMAN: Okay. If he doesn't need anybody's protection, don't offer your free protection to him. (Interruptions)... All right I will protect everybody. (Interruptions)...

उनको बोलने दीजिए ... (व्यवधान) ... आप बैठिए ...

SHRI MD. SALIM: Why is he objecting to it? (Interruptions)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Please sit down. (Interruptions)... Please sit down. (Interruptions)...

SHRI NILOTPAL BASU: What is this, Madam? (Interruptions)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: If he doesn't want your protection, don't give it to him. You speak whatever you want to speak. All right. Don't interrupt him. (Interruptions)...

SHRIMATI KAMLA SINHA: He has said something very objectionable, Madam. He has said that papers like MAHANAGAR should be wiped out. (Interruptions)...

SHRI NILOTPAL BASU: What is this, Madam? (Interruptions)...

उपसभापति: अभी उनको बोलने दीजिए। आप बैठिए ... (व्यवधान)

SHRI NILOTPAL BASU: There is the Leader of the Opposition. (Interruptions)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: I will look into the records and see whether there is anything objectionable. (Interruptions)...

श्री वसीम अहमद: मैडम, मुझे अफसोस है कि मैं बार बार आपका कहना मान रहा हूँ, पूरा हाउस आपका कहना मान रहा है मगर एक मेम्बर आपका कहना नहीं मान रहे हैं। यह मुझे निहायत अफसोस है। मैं कंडेज़ करता हूँ। पूरा हाउस आपका कहना मान रहा है। जब आप कहती हैं मैं बैठ जाता हूँ और जब आप कहती हैं मैं उठ जाता हूँ ... (व्यवधान)

उपसभापति: बैठिए ... (व्यवधान) इस हाउस में बहुत दफा ऐसे बैठस उठे हैं ... (व्यवधान) आप भी बैठिए ... (व्यवधान) किसी भी अखबार के ऊपर अगर किसी ने अटेक किया है तो यहां इस हाउस में मैटर्स उठाए जाते हैं। अखबार की फ्रीडम के हम लोग सब साक्षी हैं और चाहते हैं कि फ्रीडम आफ प्रेस भी हो और फ्रीडम आफ स्पीच भी हो। तो यह कम से कम हमारी डेमोक्रेटिक सिस्टम की मदद तो करना चाहिए।

आप मगर अपनी बात कहिए। ... (व्यवधान) आप बैठिए। ... (व्यवधान)

Mr. Jibon Roy. I have not allowed you. (Interruptions).

श्री संजय निरुपम: मैं यह पूछना चाहता हूँ कि क्या वह काशीराम के खिलाफ भी ... (व्यवधान)

THE DEPUTY CHAIRMAN: I have not allowed you to speak.

उपसभापति: आपको मैंने परमिशन नहीं दी है।

Please sit down. (Interruptions). आप व्यवधान मत डालिए।

श्री संजय निरुपम: मुझे काशीराम का ... (व्यवधान)

THE DEPUTY CHAIRMAN: What has Shri Kanshi Ram got to do with this? (Interruptions). Please sit down. (Interruptions). Please don't disturb. Shri Kanshi Ram is an hon. Member of the other House. I have ... (Interruptions). Please keep quiet. I don't want anybody to interrupt. I want him to know the rule. He is a new Member. Perhaps, he does not know the rules. I will let you know the rule. Shri Kanshi Ram is an hon. Member of the other House. Please don't take his name in any respect. Don't bring other things. What you wanted to speak, that is also not brought on the record. The Chairman gave him permission. That is why he is allowed to speak. You cannot object to the Chairman's permission. You please sit down peacefully and listen to him. He never said anything which is objectionable. He is speaking about 'Mahanagar' which is a registered newspaper. He is talking about the newspaper. Let him speak and finish.

श्री वसीम अहमद: मैडम, मैं यह बात इसलिए कहना चाहता था कि चार दिन तक वहां हमला होता रहे और पुलिस खड़े होकर देखती रहे। यह पुलिस की इयूटी है, यह सरकार की इयूटी है, उसको बचाने की कोशिश करे ... (व्यवधान)

SHRI VAYALAR RAVI (Kerala): Madam, I beg to move a resolution ... (Interruptions).

THE DEPUTY CHAIRMAN: Please sit down. (Interruptions).

**SHRI GURUDAS DAS GUPTA**  
(West Bengal): This is too much.  
(Interruptions).

**THE DEPUTY CHAIRMAN:** Please sit down. (Interruptions). You are not the first Shiv Sena Member in this House. I must remind you. There have been other Members also. Nobody ever behaved like this. I am not losing my temper. I am not using my power which the Constitution gives me, which you all have given me. I am using my utmost patience to tell you to please sit down and don't interrupt. How many times should I say it? You tell me. I will repeat it that many times. please don't interrupt.

कृपया आप बीच में मत बोलिए। अगर आपको कुछ बोलना है तो परमिशन लेकर बोलिए। मगर इस तरह से मेबर को इंटरए करने की हमारी परम्परा नहीं है। अगर उन्होंने कोई अन-पार्लियामेन्ट्री बात कही है तो मैं उनको खुद न बोल दूंगी और सब को न बोल दूंगी। मगर जिस तरह से नहीं करना अच्छा लगता है... (व्यवधान) ताली बजाने की आवश्यकता नहीं है, मैंने तो खाली रूल बताया है। ताली तो आप अपने लिए बजाए कि आपने ऐसा रूल बनाया है।

**श्री वसीम अहमद:** मैडम, मैं यह कह रहा था और मैं इस हाऊस का शुक्रिया अदा करता हूँ कि... (व्यवधान)

**उपसभापति:** जल्दी खत्म करिएगा।

**श्री वसीम अहमद:** मैं जल्दी खत्म कर रहा हूँ। मेरे कहने का मतलब यह है कि चार दिन तक हमला होता रहे, वहाँ पुलिस खड़े होकर देखती रहे और वहाँ पर बार-बार हमला होता रहा और वहाँ के वर्क्स तथा जो वहाँ पर अखबार स्टाल पर बिकने जाएं उसको रोकने का भी काम करें, उस पर हमला भी करें, यानी उसको बेचने भी न दें और उसके एडिटर को एक बार नहीं उस पर यह तीसरा और चौथा हमला हुआ। यह पहली हरकत नहीं हुई है। जब-जब देखिए, जहाँ-जहाँ देखिए यह क्या वजह है कि क्या इनको कोई एक्स्ट्रा-कॉन्स्टीट्यूशनल पावर मिली हुई है, क्या यह मुल्क का अलग हिस्सा है वहाँ यह जो चाहें कहें, जो इनका दिल चाहे मेगजीन में कहें और इस मुल्क में उन पर कोई एक्शन नहीं होता। मैं दरखास्त करता हूँ इस हाऊस से और सरकार से कि ऐसे लोगों को गिरफ्तार किया जाए और सरकार को हटाया जाए और उनकी प्रोपर्टी के खिलाफ सी०बी०आई०

की इन्क्वायरी कराई जाए ताकि दूध का दूध और पानी का पानी इस मुल्क के सामने आ सके और जो अवाम शांति पसंद है वह अपना फैसला कर सके और मैं अपनी बात कह कर यहाँ समाप्त करता हूँ। बहुत-बहुत धन्यवाद।... (व्यवधान)

**THE DEPUTY CHAIRMAN:** No more association. I am not allowing.

**श्री संजय निरुपम:** मैडम, मुझे कुछ कहना है?

**उपसभापति:** क्या कहना है आप को? आप परमिशन ले लीजिए, मैं आप को अलाउ कर दूंगी। यह हो जाने दीजिए, मैं आपको अलाउ कर दूंगी। If you what to say something, take my permission and say it peacefully. You are a Member of this House and you have a right to speak. मगर झगड़ा मत करिएगा।

**श्री संजय निरुपम:** मैडम, मैं माननीय सदस्य और पूरे सदन को यह सूचना देना चाहता हूँ कि थाणे की जिस मीटिंग की चर्चा की जा रही है, उस मीटिंग में 5 हजार नहीं बल्कि 5 सौ से 7 सौ के बीच लोग थे। श्री खेरनार, जिन का पूरा नाम गोविंद राघो खेरनार है, वह मुंबई म०न०स० के निलंबित उपायुक्त हैं। उन्होंने वहाँ मीटिंग में भाषण दिया और उन के भाषण का सिर्फ एक टार्गेट था कि हमारे शिव सेना प्रमुख पर अटैक करना। मैडम, उन के बारे में ऐसी जानकारी दी गयी है और ऐसा आरोप लगाया गया है जिसका उल्लेख मैं इस सदन में नहीं कर सकता। वह अनपार्लियामेन्टरी लेंग्वेज है, इसलिए मैं उस शब्द का प्रयोग यहाँ नहीं करना चाह रहा हूँ। अब "महानगर" ने क्या किया? खेरनार के उस बयान को हैडलाइन बनाकर अखबार में छाप। उस खबर को पढ़ने के बाद, उस हैडलाइन को पढ़ने के बाद हमारी शिव सेना की कुछ महिलाएँ खेरनार के यहाँ गयीं और उन्होंने कहा कि आप ने जो कुछ कहा है, वह एकदम निराधार है। हम खुद महिलाएँ हैं और आप ने साहब का नाम महिलाओं से जोड़ा है। हम साहब को पिछले 20 सालों से जानते हैं जबकि आप इतने समय से नहीं जानते होंगे तो आप के कहने का क्या आधार है? मैडम, इस का जवाब देने के बजाय खेरनार की पत्नी ने उन महिलाओं के ऊपर गिलास फेंका और फिर महिलाओं ने उन के साथ मारपीट की।

मैडम, दूसरी बात इन्होंने कही कि किसी को गिरफ्तार नहीं किया गया और मुंबई पुलिस वहाँ खड़ी थी। ऐसा कुछ नहीं है। मुंबई पुलिस ने 25 महिलाओं को गिरफ्तार किया है और हमारे माननीय सहयोगी सदस्य श्री आदिक शिरोडकर जोकि वहाँ के एडवोकेट हैं,

कह रहे हैं कि कॉर्पोरेटर को भी गिरफ्तार किया है। तो सरकार ने जो एक्शन लेना है, मुंबई पुलिस को जो एक्शन लेना है, वह मुंबई पुलिस ले रही है। जहां तक बाला साहब जी को गिरफ्तार करने की बात है, मैं बोलूंगा कि उस से पहले "महानगर" जैसे अखबार को बंद करना चाहिए। वह इसलिए कि एक अखबार का काम करने का जो तरीका होता है, उस की जो नीति होती है, उस नीति का वह अखबार पालन नहीं करता है। उस अखबार के एडीटर का एक ही मकसद होता है कि किसी तरह शिव सेना को डैमेज किया जाए। शिव सेना प्रमुख के ऊपर ऊल-जलूल आरोप लगाए जाएं। मैडम, ऐसे आरोप कभी उन्होंने राजीव गांधी की पत्नी श्रीमती सोनिया गांधी के ऊपर भी लगाये थे और उस के बाद उन्हें माफी मांगनी पड़ी थी। अब इसी तरह का आरोप उन्होंने हमारे माननीय शिव सेना प्रमुख बाल ठाकरे के ऊपर लगाया है। धन्यवाद।

**उपसभापति:** अब यही बात आप शांति से कहते तो इतना झगड़ा नहीं होता और हाउस का समय भी जाया नहीं होता ... (व्यवधान) ... अखबार बंद किया जाए, खोला जाए, यह काम हमारा नहीं है और न ही इस पर कुछ डिस्कशन होगा। ... (व्यवधान) ...

**श्री मोहम्मद सलीम:** A wrong message should not go out. कोई अखबार अगर गलत खबर छपता है तो उस के लिए भी हमारे संविधान में, कानून में कुछ बंदोबस्त है। उस का मतलब यह नहीं है कि उस पर हमला करें। हाउस में यह बात होती है तो गलत मैसेज जाता है।

**THE DEPUTY CHAIRMAN:** That is exactly what I am saying. To decide whether a newspaper should be permitted or should not be permitted, we have a procedure in this country. If a newspaper makes a wrong statement, you have a lawyer who is a Member of your party and he will support you and me too. There is a procedure laid down for it. You do not have to fight the editor. आपके अखबार से कुछ खबर आती तो आप के अखबार से भी सब लोग लड़ते। तो आप भी अखबार के एडीटर हैं और उस का जो एक प्रोसीजर है वह एप्लाइ करना चाहिए। चौधरी चुन्नी लाल।

**श्री वसीम अहमद:** मैडम, एक बात...

**उपसभापति:** अब कोई बात नहीं। यह मामला खत्म हो गया। वसीम साहब आपको कहीं जाना था? अब आप जाइए। मैं ने आप का एपॉइंटमेंट याद दिलाया।

## RE: NON-PAYMENT OF SALARIES TO TEACHERS IN UTTAR PRADESH

**चौधरी चुन्नी लाल** (उत्तर प्रदेश): उपसभापति महोदया, उत्तर प्रदेश में प्राइमरी पाठशालाओं के लगभग 5 लाख शिक्षक हैं। गत वर्ष पूरे प्रदेश में लगभग 25 हजार शिक्षकों का चयन हुआ और नियुक्तियां हुईं। ये नियुक्तियां फरवरी, 1996 तक पूरी कर ली गयीं, लेकिन फरवरी से आज तक इन 25 हजार शिक्षकों को वेतन नहीं मिल रहा है और ये भुखमरी के कगार पर पहुंच चुके हैं। महोदया, इन 25 हजार शिक्षकों में लगभग 6 हजार शिक्षक दलित वर्ग के हैं जिन के पास एक बोधा भी खेती योग्य भूमि नहीं है और कोई वैकल्पिक व्यवस्था भी उनकी और उन के बच्चों की जीविका की नहीं है। जून, 1995 में जो शिक्षक रिटायर हो गए हैं, उनको रिटायर हुए डेड साल हो गया, लेकिन उनको पेंशन भी नहीं मिल रही है। इसी तरह इनका जी०पी०एफ० भी वर्षों से कटता आ रहा है, जिसका कोई रिकार्ड उपलब्ध नहीं है। उत्तर प्रदेश शिक्षक संघ पिछले 6 माह से उत्तर प्रदेश सरकार को प्रतिवेदन देती आ रही है, मगर आज तक उत्तर प्रदेश सरकार ने उनके प्रतिवेदन का न तो निस्तारण किया और न ही उनकी समस्याओं का कोई हल निकाला है।

मैडम, शीघ्र ही तय्यार आ रहे हैं और अगर यही स्थिति बनी रही तो उनके बच्चे तय्यार भी नहीं मना पाएंगे। अतः मैं आपके माध्यम से भारत सरकार से अपील करता हूँ कि शीघ्रतः शीघ्र इन शिक्षकगण की, जो अल्प-वेतन भोगी हैं, उनकी इन समस्याओं को हल कराएं, अति कृपा होगी। धन्यवाद।

## RE: KILLING OF FIVE DALIT PERSONS OF A FAMILY IN BHOJPUR, BIHAR

**श्री जलालुद्दीन अंसारी** (बिहार): मैडम, बिहार के भोजपुर जिला में खनेट गांव दलितों का एक छोटा सा टोला है, जिसको कहते हैं मुसेहद टोला, इसमें हमारे गज्य के मुसेहद जाति के लोग, जो सबसे गरीब दलित हैं, हरिजन हैं, वह रहते हैं। उस खनेट टोला पर 12 तारीख की रात को एक हथियारबंद गिरोह आया और वहां उन गरीबों को गोलीयों से भून डाला, जिसमें दं